

गणेश की पूजा करने की भी अनेक कथाएँ हैं। एक कहानी के अनुसार हस्तिमुख जान कर कोई इनका तिरस्कार न करे, इसलिए देवताओं ने यह व्रत लिया कि बिना गणेश पूजा किए हम (देवता) पूजा ग्रहण नहीं करेंगे। तभी से गणेश की पूजा पहले होती है। भगवान गणेश जी ने वेदव्यास के साथ मिल

कर महाभारत लिखा। जब ऋषि वेदव्यास ने गणेश को महाभारत लिखने के लिए बुलाया, तब गणेश ने कहा कि वह महाभारत तो लिखेंगे किंतु उसके लिए आवश्यक यह है कि लिखाने वाला व्यक्ति कहीं पर भी रूकेगा नहीं और वह अपने विचार और भाषा में बिल्कुल स्पष्ट होगा।

गणेश चतुर्थी पर्व भाद्रपद, शुक्ल चतुर्थी को आरंभ होता है और दस दिन चलता है। गणेश को खेती-बाड़ी के संबंध में अच्छा देवता माना जाता है। अतः खेती के ठीकठाक हो जाने पर उनकी पूजा की जाती है। गणेश चतुर्थी महाराष्ट्र राज्य में अत्यंत धूमधाम से मनाई जाती है। प्रत्येक घर या मोहल्ले में गणेश की प्रतिमा स्थापित की जाती है और पूजा की जाती है। यह कहना कठिन है कि वहाँ यह पर्व कब आरंभ हुआ, किंतु 18वीं शताब्दी में वहाँ के पेशवाओं (1714-1818) ने इस त्योहार को अपने राजमहल में मनाना आरंभ किया।

दस दिन तक पूजन-कीर्तन, प्रवचन आदि के बाद गणेश की प्रतिमा को भलीभाँति सजाया जाता है। फिर नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दिया जाता है। पेशवाओं का राज्य 1818 में समाप्त हो गया जबकि अंग्रेजों ने उनके राज्य पर अधिकार कर लिया। तब यह त्योहार महलों से निकल कर आम जनता में फैला। वर्ष 1895 से इस त्योहार को एक अन्य रूप मिला जबकि लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने इस त्योहार को एकता और जागृति पैदा करने का माध्यम बनाया।

शिक्षक वही है जो नैतिक गुणों का निर्माण करे

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन



5 सितंबर
शिक्षक दिवस

एक शिक्षक की दी हुई शिक्षा से ही बच्चे किसी देश का भविष्य बनते हैं, किसी समाज के कर्णधार बनते हैं। ऐसे में जरूरी है कि शिक्षक छात्रों को शिक्षा के नाम पर सिर्फ जानकारी भर न दें। ऐसा नहीं है कि जानकारीयों और तकनीकी कौशलों का जीवन में कोई महत्व नहीं है, बहुत महत्व है। लेकिन ऐसी जानकारीयों और तकनीकी कौशल तो कहीं से भी हासिल किये जा सकते हैं। मगर एक छात्र शिक्षक से जो बौद्धिक झुकाव और लोकतांत्रिक भावना हासिल करता है, वह कहीं और से नहीं मिल सकती। इसलिए एक अच्छा शिक्षक वही है जो छात्रों में नैतिक गुण विकसित करे, उनमें विवेक पैदा करे। ऐसा वही शिक्षक कर सकता है, जो शिक्षा के प्रति समर्पित हो, प्रतिबद्ध हो और शिक्षा को काम नहीं, नौकरी नहीं बल्कि मिशन समझे।

इंसान का
नवनिर्माण

एक शिक्षक इंसान का नवनिर्माण करता है, एक शिक्षक इंसानों की फसल पैदा करता है, एक शिक्षक भविष्य को गढ़ता है, इसलिए अगर शिक्षक की भविष्य के बारे में स्पष्टता नहीं होगी, अगर एक शिक्षक को यह पता नहीं होगा कि उनकी संस्कृति का धेय क्या है? हमें जाना कहां है तो वह भला हमें राह कैसे दिखा पायेगा? इसलिए न सिर्फ एक शिक्षक की यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि वह अपने राष्ट्र धर्म, संस्कृति और लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्ध हो बल्कि यह समाज से भी अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षक को बाकी गैर जरूरी चिंताओं और व्यस्तताओं से मुक्त रखे। एक स्वतंत्र और चिंता मुक्त शिक्षक ही भविष्य की नैतिक और मूल्यवान पीढ़ियां गढ़ता है।

एक जरूरी पुल

शिक्षक का एक बहुत महत्वपूर्ण काम है इंसान को स्वतंत्र, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनाना। ऐसा नहीं है कि जिसे उच्चस्तर तक शिक्षा न हासिल हुई हो, वह एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक नहीं बन सकता। हमारे तमाम महापुरुषों ने अपने स्वाध्याय और स्वानुशासन की बदौलत चरम की ऊंचाई छू सके हैं, लेकिन ये सबके लिए संभव नहीं है। यह सिर्फ विलक्षण बुद्धि वालों के लिए ही संभव है। किताबों में सब कुछ लिखा है, लेकिन किताबें खुद से नहीं बोलतीं, आप उन्हें पढ़ सकते हैं, आप उनसे संवाद कर सकते हैं, यह भी तरीका है मगर ज्यादा आसान और वैज्ञानिक तरीका यही है कि किताबों से हमारा रिश्ता एक संवेदनशील शिक्षक कराए। इससे किताबें ज्यादा विश्वसनीय हो जाती है।

शिक्षक बेहद

चरित्रवान हो

शिक्षक का सबसे बड़ा गुण है, छात्र में नैतिकबोध और चरित्र का निर्माण। कोई भी शिक्षक ये दोनों चीजें महज भाषणों के जरिए अपने छात्रों में स्थानांतरित नहीं कर सकता। सिर्फ लंबे-लंबे प्रभावशाली भाषण देकर ही छात्रों को चरित्रवान और मूल्यवान नहीं बनाया जा सकता। छात्रों को चरित्रवान बनाने के लिए एकमात्र कसौटी यही है कि उनके शिक्षक बेहद चरित्रवान हों। वास्तव में मां बाप से भी ज्यादा छात्र अपने शिक्षकों का अनुसरण करते हैं, लेकिन अच्छे और प्रभावशाली शिक्षकों का औसत या असामाजिक शिक्षकों का प्रभाव छात्रों पर बहुत देर तक नहीं रहता। शिक्षालय से बाहर जाने के बाद तो यह बिल्कुल भी देर तक नहीं रहता। इसकी वजह यह होती है कि बाहर की दुनिया में वैसे ही लोगों और चरित्र की भरमार होती है, तो प्रभावशाली शिक्षक बनने के लिए आपको नैतिक रूप से मजबूत बनना ही होगा। क्योंकि न सिर्फ एक नैतिक रूप से मजबूत शिक्षक ही अपने छात्रों पर प्रभाव डालता है बल्कि उसे ही पूरी जिंदगी छात्र याद रखते हैं।

■ शेष पेज दो पर

शिक्षक वही है जो नैतिक...

पेज एक से आगे...

व्यक्तित्व का चुम्बकीय प्रभाव

बच्चे को मां-बाप जन्म देते हैं। एक निश्चित उम्र तक बच्चा मां-बाप की छाया में पलता बढ़ता है। इसके बाद वह स्कूल पहुँचता है। इस तरह देखा जाए तो बच्चों पर पहला प्रभाव उन पर पहला असर मां बाप का होता है। लेकिन शिक्षा का मनोवैज्ञानिक प्रभाव, शिक्षाणालय का माहौल और सबसे बड़ी बात शिक्षक के व्यक्तित्व का चुम्बकीय प्रभाव इतना शक्तिशाली होता है कि वह बच्चे की बुनियाद के मूल्यबोध को, चरित्र को, अपने सानिध्य के प्रभाव से बदल सकता है। इसलिए बच्चों पर मां बाप से भी ज्यादा असर उनके योग्य और समर्पित शिक्षकों का होता है। इस बात को याद रखा जाना चाहिए कि सभी शिक्षकों का असर उनके छात्रों पर समान नहीं होता। सिर्फ अच्छे शिक्षकों का प्रभाव ही छात्रों पर पड़ता है। भले तमाम छात्र उस समय यह बात समझ न पाएं, लेकिन शिक्षालय से बाहर जाने और व्यवहारिक दुनिया में कदम रखने के बाद उन्हें पता चल ही जाता है कि आखिर उनके शिक्षक कैसे थे? इसलिए मैं हमेशा कहता हूँ। शिक्षक और छात्र का रिश्ता जन्म भर का होता है।

तार्किकता से समझ सकें

बौद्धिकता सिर्फ व्याख्यानों के लिए नहीं होती। बौद्धिकता से आशय यह नहीं है कि आप हमेशा बुद्धिजीवियों की तरह बात करें। बौद्धिकता से आशय यह है कि हम जिंदगी के हर संदर्भ को उसकी व्यवस्था और तार्किकता से समझ सकें। हम विवेकवान हों, बौद्धिकता इसके लिए हममें समझ भी पैदा करती है और साहस भी। जब मैं बौद्धिकता पर जोर देता हूँ तो मेरा मतलब यह नहीं होता कि हर छात्र आगे चलकर दार्शनिक बन जाए। दुनिया में हर एक की प्रकृति भिन्न होती है। जिनको दार्शनिक बनना है या जिनमें दार्शनिक बनने के तत्व हैं वह बिना किसी और की कोशिश के अपनी जिज्ञासा से भी बन जाते हैं। बौद्धिकता से मेरा आशय लोकतंत्र के प्रति आस्था से है। लोकतंत्र के प्रति आस्था से आशय सकारात्मकता से है, सहयोग से है, समदृष्टि से है। इसलिए मैं बार-बार कहता हूँ, छात्रों में बौद्धिक चेतना और बौद्धिक झुकाव बहुत जरूरी है, क्योंकि यह एक ऐसा पैमाना है जिसकी समझ आते ही हम हर कसौटी को उसके गुण, दोषों में सही से परख सकते हैं।

(डॉ. राधाकृष्णन के विचारों पर आधारित)